भारत की राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

डॉ. राजेश गुप्ता

पिछले कुछ वर्षों विशेषकर 1967 से भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। राज्यों की राजनीति में तो इनका बढ़ता प्रभाव क्षेत्रीय भावनाओं को बढ़ा ही रहा है राष्ट्रीय राजनीति को भी बहुत हद तक प्रभावित किया है। राष्ट्रीय राजनीतिक दलों को सरकार के गठन के लिए क्षेत्रीय दलों के साथ गठबन्धन के लिए झुंकना पड़ा है। केन्द्र राज्य सम्बन्धों में तनाव और विवाद, जल्दी-जल्दी चुनाव, अल्पकालीन संविद सरकारों का गठन और पतन, दल-बदल, अवसरवादी व सौदेबाजी की राजनीति क्षेत्रवाद व अलगाववाद् की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई। इन सबको देखते हुए यह माना जाने लगा कि ये सभी प्रवृत्तियाँ भारतीय लोकतंत्र के लिए सैद्धान्तिक रूप से अनुपयुक्त, हानिकारक और राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधक है। परन्तु इस धारणा को मैंने एक पक्षीय मानते हुए शोध-पत्र के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि परिवर्तित परिस्थितियों में किस प्रकार क्षेत्रीय दलो की भूमिका भारतीय राजनीति में व्यवहारिक दृष्टिकोण से सकारात्मक, निर्णायक एवं उपयोगी हो सकती है। एक ओर जहाँ राजनीतिक व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, वहीं दूसरी ओर सकारात्मक प्रभाव भी परिलक्षित होता है।

आधुनिक युग लोकतंत्र का युग है। लोकतंत्र में सीमित, संवैधानिक और उत्तरदायी सरकार होती है। सरकार का गठन दलीय व्यवस्था के आधार पर होता है। विभिन्न राजनीतिक दल सामान्य निर्वाचनों में भाग लेते हैं जिस दल को बहुमत से जनसमर्थन प्राप्त होता है वह सरकार बनाता है इसीलिए राजनीतिक दलों को, 'अदृश्य सरकार' एवं 'जनतंत्र का प्राणवायु' कहा जाता है । प्रो. मुनरों के शब्दों में ''जनतंत्रात्मक शासन दलीय शासन का दूसरा नाम है... विश्व के इतिहास में कभी ऐसी सरकार नहीं रही जिसमें दल का अस्तित्व न रहा हो। राजनीतिक दल लोकतंत्र की आधार शिला हैं। दल मतदाताओं की अव्यवस्थित भीड़ के स्थान पर व्यवस्था स्थापित करते हैं और राजनीतिक व्यवस्था को संचालन ष्टाक्ति प्रदान करते हैं। वे निर्वोचनों में अपना उम्मीदवार खड़ा करते हैं तथा अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों का प्रचार करते हैं। हरमन फाइनर ने कहा है कि 'राजनीतिक दल अमूर्त मतदाओं को मूर्त रूप देते हैं दलों के अभाव में मतदाता या तो नपुंसक हो जायेंगे या विनाशकारी, जो ऐसे असंभव नीतियों का अनुगमन करेगें जिससे राजनीतिक तंत्र धवस्त हो जायेंगे।' प्रो. लास्की के शब्दों में राजनीतिक दल देश में केसरशाही से हमारी रक्षा करने के सर्वोत्तम साधन हैं। लार्ड ब्राइस ने कहा कि कोई भी स्वतंत्र देश इसके बिना नहीं रह सकता है।

मैकाइवर के अनुसार राजनीतिक दलों के अभाव में न तो सिद्वांतों की संगठित अभिव्यक्ति हो सकती है न नीतियों का उचित विकास....। जनतंत्रीय व्यवस्था के सफल संचालन में राजनीतिक दल महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य अंग हैं। मनुष्यों में विचारों की विभिन्नता के साथ विचारों की समानता भी पायी जाती है। सामाजिक आर्थिक प्रश्नों पर समान विचार रखने वाले व्यक्तियों के साथ राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से जिन संगठनों का निर्माण करते हैं उन्हें राजनीतिक दल कहते हैं। दल नागरिकों के ऐसे समूह हैं जो सार्वजनिक प्रश्नों के विषय

* Assistant Professor, Political Science, HRPG College, Khalilabad, Uttar Pradesh, India